लड़का-लड़की की गफलत

डॉ. शशिकांत प्रधान

मैं बिल्कुल सही बोल रहा हूं , झूठ ज़रा भी नहीं। अखबार में लिखा है कि अमेरिका में एक पुरुष की जचकी हुई है। जचकी भी प्राकृतिक रूप से नहीं हुई, सिज़ेरियन ऑपरेशन करके बच्चे को पेट से बाहर निकाला गया। जच्चा और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। और तो और, पैदा होते ही बच्चा रोया भी।

वैसे बच्चे के रोने का एक और भी कारण था। उसे अपने माता-रूपी पिता का दूध पीने को नहीं मिल पा रहा था क्योंकि 'पिता' के स्तन ऑपरेशन के द्वारा पहले ही निकाल दिए गए थे। ऐसा नहीं करते तो पोल खुल जाती। वास्तव में यह 'पुरुष' एक स्त्री थी जिसके बाहरी प्रजनन अंग शल्य क्रिया द्वारा बदल कर पुरुष जननांग बना दिए गए थे। यह पता नहीं चल पाया कि यह नकली पुरुष अन्य पुरुषों की तरह शारीरिक क्रियाएं कर पाता था या नहीं, किन्तु इतना तो सच है कि उसका गर्भाशय असली था, अन्यथा उसमें बच्चे का विकास होना संभव ही नहीं था। वह स्त्री पुरुष तो बन गई थी मगर उसकी मां बनने की इच्छा समाप्त नहीं हुई थी। अतः कृत्रिम गर्भाधान से गर्भ धारण करना पड़ा। बाहरी जननांगों को बदल देने के कारण न तो सामान्य तरीके से गर्भ धारण संभव था, न ही प्रसव। इसलिए ऑपरेशन करके बच्चे को बाहर निकालना पड़ा।

ऐसी घटनाएं प्रायः सुनने में आती हैं कि किसी व्यक्ति का लिंग परिवर्तन हो गया। ऐसा प्रकृति की भूल से हो जाता है। इसके बारे में जीव विज्ञान की दृष्टि से विचार करते हैं।

शरीर क्रिया विज्ञान के अनुसार पुरुषों में वृषण में उपस्थित कोलेस्टेरॉल से नर हारमोन टेस्टोस्टेरोन बनता है। पुरस्थ ग्रंथि (प्रोस्टेट) और शुक्राशय में एक एन्ज़ाइम इस टेस्टोस्टेरोन को अधिक असरकारक हारमोन डाईहाइड्रोटेस्टोस्टेरोन (डी.एच.टी.) में बदल देता है। कभी-कभी ऐसा होता है कि गर्भावस्था के दौरान नर भ्रूण में डी.एच.टी. की कमी हो जाती है। परिणाम यह होता है कि उसमें अण्डकोश नहीं बन पाते और बाहरी जननांग मादा जननांगों के समान दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में लड़के को लड़की मान लिया जाता है।

जब किशोरावस्था में टेस्टोस्टेरोन अधिक बनने लगता है तब दाढ़ी-मूंछ बढ़ना, आवाज़ मोटी होना, जननांगों पर स्थित बालों की जमावट, मांस पेशियों की बनावट जैसे पुरुषोचित लैंगिक लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इन्हें द्वितीयक लैंगिक लक्षण कहते हैं। ऐसे व्यक्ति की सोनोग्राफी करने पर आंतरिक नर जननांग दिखाई पड़ते हैं, जैसे शुक्र वाहिनी, शुक्राशय आदि।

इसके उलट एक उदाहरण देखते हैं। किसी भ्रूण का शरीर बनते समय उसके बाहरी जननांगों का आकार गलत हो जाता है।

जैसे हो सकता है कि कन्या भ्रूण में भग-शिश्न यानी क्लिटोरिस सामान्य से बड़ा हो जाए और पुरुष के लिंग के समान दिखाई पड़ने लगे। यदि उसके नीचे की दरार बंद हो जाए या शल्य क्रिया के द्वारा बंद कर दी जाए तो ऐसा लगता है कि नर जननांग हैं। किन्तु आंतरिक जननांग तो स्त्री के ही रहते हैं और होती वह स्त्री ही है। केवल बाह्य अंगों के विकास में गलतफहमी की वजह से उसे लड़का मान लिया जाता है।

सामान्य तौर पर गर्भावस्था के नौवें यानी आखिरी महीने में नर भ्रूण के वृषण उसके पेट में से अण्डकोश में उतरते हैं। कभी-कभी किसी कारण से वृषण अण्डकोश में उतर नहीं पाते। इसके साथ ही, अण्डकोश के दो भाग, जो लगभग इसी समय आपस में जुड़कर एक बंद थैली बनाते हैं, जुड़ नहीं पाते। ऐसी स्थिति में वे स्त्री के बाहरी जननांगों के बृहत भगोष्ठों यानी लैबिया मेजोरा के समान दिखाई देते हैं। इनके ऊपर की ओर मूत्र नलिका का छिद्र दिखाई देता है। इससे यह आभास होता है कि बच्चा लड़की है। लड़के को लड़की मान लिया जाता है किन्तु सोनोग्राफी करने पर अंडाशय और गर्भाशय के स्थान पर नर जननांग दिखाई देते हैं।

इस प्रकार 'लड़कियों' के लड़का बन जाने और'लड़कों' के लड़की बन जाने के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं।

लिंग निर्धारण के बारे में सुश्रुत ने कहा है,"तत्र बाहुल्यात पुमान्, आर्तवबाहुल्यात स्त्री, सामान्य उभयोः नपुंसकम् इति।" अर्थात्, शुक्र अधिक होने पर पुरुष, आर्तव अधिक होने पर स्त्री और दोनों के बराबर होने पर नपुंसक बनता है। यह एक सीधा-सादा विचार है। उस समय शरीर रचना विज्ञान का और भ्रूण के विकास का इतना अध्ययन नहीं हुआ था। मोटे-मोटे अनुमान लगाए जाते थे और हर किसी को अपनी राय व्यक्त करने की आज़ादी होती थी।

यदि हम इतिहास में देखें तो लिंग परिवर्तन के कई रोचक उदाहरण मिलते हैं। ये उदाहरण दो प्रकार के होते हैं। कुछ उदाहरणों में लड़के को (उसके विकास की कुछ गड़बड़ियों के कारण, जिनकी चर्चा ऊपर की गई है) लड़की मान कर उसका पालन-पोषण लड़की के समान किया जाता है और इसके चलते उसकी मानसिकता भी स्त्रियों के समान ही बन जाती है। समाज में वह लड़कियों के समान ही व्यवहार करता है, किन्तु किशोरावस्था आने पर उसे अपनी सच्चाई पता चल ही जाती है।

डेरियन नामक व्यक्ति को आयु के बारह वर्षों तक एक सुंदर लड़की मान कर बड़ा किया गया था। किशोर होने पर पता चला कि वह तो लड़का है। सुंदर होने के कारण युवतियां उस पर मोहित हो जाती थीं। बाद में उसकी एक स्त्री से शादी हुई और उससे बच्चे भी हुए, किन्तु उसके मन में स्त्री सुलभ कोमलता बनी रही।

कुछ प्रकरणों में यह देखा गया है कि उस व्यक्ति को जानबूझकर अपने स्वाभाविक लिंग के विपरीत व्यवहार करने को मजबूर होना पड़ता है। *डिक्शनरी ऑफ नेशनल बायोग्राफी* में ऐसा एक उदाहरण दिया गया है। डॉ. जेम्स एक स्कॉटिश महिला थी। 1795 से 1865 तक की अपनी 70 साल की ज़िंदगी में वह पुरुष के भेष में रही। इसी छद्म भेष में वह एक कुशल सर्जन बन गई और फौज की मेडिकल शाखा में बड़े पद पर पहुंच गई। किसी को यह शक नहीं हुआ कि वह एक स्त्री है। एक बार तो उसे एक अन्य पुरुष के साथ कुश्ती भी करनी पड़ी। उसने यह सब क्यों किया? उसका पति शराबी था और उसे परेशान करता था। उससे छुटकारा पाने के लिए जेम्स ने यह अनोखा रास्ता अपनाया था। उसका राज़ केवल एक व्यक्ति - दक्षिण अफ्रीका का गवर्नर लॉर्ड सॉमरसेट - जानता था। एक बड़े व्यक्ति का समर्थन होने के कारण वह यह दुःसाहस कर सकी। बहरहाल डॉ. जेम्स ने जो छद्म पुरुष भेष धारण किया था उसमें उसकी शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि सामाजिक स्थिति का हाथ था।

एक अन्य रोचक प्रकरण का विवरण डॉ. हैंडिसाइड द्वारा 1835 में दिया गया था। सन 1798 में पैदा हुई मैरी नामक महिला घरेलू नौकरानी का काम करती थी। 30 वर्ष की आयु में एक दुर्घटना में उसके पैर की हड्डी टूट गई। उसके पैर का ऑपरेशन करते समय डॉक्टर ने यह पाया कि वह स्त्री न हो कर वास्तव में एक पुरुष था। उसकी नौकरी तो जाती रही, किन्तु अपनी इस बदनसीबी को उसने

कमाई का साधन बना लिया। वह अस्पतालों और मेडिकल कॉलेज में जाकर विद्यार्थियों को अपनी जांच करने का मौका देता था और इसके बदले में फीस वसूलता था।

कभी-कभी अंतःस्रावी ग्रंथियों की क्रिया में गड़बड़ी होने से भी लिंग परिवर्तन होने के उदाहरण सामने आते हैं। अंतःस्रावी ग्रंथियां हमारे शरीर में हारमोन बनाती हैं। सन 1930-32 में इंग्लैंड के चेरिंग क्रॉस अस्पताल में एक ऐसा प्रकरण हुआ था। आयु के सोलहवें साल में एक सुंदर लड़की में एक बीमारी के बाद पुरुष के लक्षण दिखाई देने लगे। पूरी तरह जांच करने के बाद उसकी पियूष ग्रंथि का ऑपरेशन किया गया। इसके बाद उसके पुरुषत्व के लक्षण गायब हो गए और वह फिर से एक सुंदर स्त्री बन गई।

इन सब उदाहरणों में यह बात उभर कर आती है कि कभी-कभी व्यक्ति का शारीरिक यानी जननांग के अनुसार कोई लिंग होता है मगर किसी कारणवश उसमें विपरीत लिंग के लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

इस लेख की शुरुआत में जिस जच्चा पिता का उल्लेख किया गया है वह भी स्त्री ही थी। उसका गर्भाशय सामान्य था और इसी वजह से उसमें गर्भ पल सका। उसने बाहरी जननांगों को बदलने के लिए शल्य क्रिया का सहारा लिया और बहुत अधिक मात्रा में पुरुष हारमोन लेकर दाढ़ी-मूंछ जैसे द्वितीयक पुरुषोचित लैंगिक लक्षण पैदा करने में सफल रही।

ऐसी शल्य क्रिया के लिए स्तनों से शुरुआत करनी पड़ती है और उन्हें हटा देना पड़ता है। इसके फलस्वरूप उस स्थान की त्वचा ढीली पड़ जाती है। उसे सिलाई के द्वारा समतल करना पड़ता है। एकाध साल बाद इस त्वचा की हालत (यानी वह कितनी सिकुड़ी है) देखकर यदि आवश्यक हुआ तो दोबारा शल्य क्रिया करनी पड़ती है। आंतरिक जननांग (अंडाशय, अंड वाहिनियां और गर्भाशय) भी ऑपरेशन के द्वारा निकाल दिए जाते हैं। ऐसा लगता है कि इसके गर्भाशय को जानबूझकर रहने दिया गया था।

इस प्रकार की शल्य क्रिया से बाहरी जननांगों में तो फर्क पड़ जाता है, किन्तु इस लिंग परिवर्तन का शरीर की कोशिकाओं पर कोई असर नहीं होता। उनके गुणसूत्र पूर्ववत बने रहते हैं। इस कृत्रिम तरीके से स्त्री से पुरुष बनने वाला व्यक्ति प्रजनन नहीं कर सकता। कृत्रिम तरीके से गर्भधारण करना पड़ता है (बशर्ते कि गर्भाशय सही सलामत हो) और गर्भ की उचित वृद्धि के लिए स्त्री हारमोन लेने पड़ते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 53 का हल

भू	त		मा	व	ठा			अ
स्थि		सां	प			ज	ल	ज
र	थ		दं		खी	रा		ग
	ल		ड	का	र		सि	र
	च	क्षु		र्यि		पा	लि	
ह	र		ह	की	म		कॉ	
त		प	ल		त		न	ग
प्र	त्य	क्ष			भे	क		ज
भ			शा	य	द		बे	र